International Journal of Applied Research 2016; 2(12): 187-189

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(12): 187-189
www.allresearchjournal.com
Received: 15-10-2016
Accepted: 16-11-2016

हेमलता
शोधार्थी जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी जगतपुरा, जयपुर

शुभा व्यास
प्रोफेसर जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी जगतपुरा, जयपुर

Correspondence
हेमलता
शोधार्थी जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी जगतपुरा, जयपुर

राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय में उपलब्ध शैक्षिक ई–संसाधनों का विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने की स्थिति का अध्ययन

हेमलता, शुभा व्यास

पृष्ठभूमि

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में पुस्तकालय का विशेष स्थान होता है। पुस्तकालय शिक्षा व्यवस्था का एक क्रियाशील एवं महत्त्वपूर्ण अंग होता है। सदियों से सृजित ज्ञान पुस्तकालय में धीरे–धीरे संचित होता रहता है इसलिए पुस्तकालय को संग्रहित ज्ञान का भण्डार कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। पुस्तकालय के निर्माण एवं विकास में समाज का अपार धन व्यय किया जाता है। समाज के ही सदस्यों द्वारा ज्ञान के संसाधनों एवं पुस्तकालयों की सेवाओं का उपयोग किया जाता है।

शोध और विकास में पुस्तकालयों का योगदान

शोध आज एक सामाजिक आवश्यकता है क्योंकि सतत् वृद्धिशील जनसंख्या और उसके उच्च स्तरीय जीवनयापन के लिए अधिकाधिक और नई सामग्री की आवश्यकता पड़ती है जिसकी पूर्ति नित्य नवीन अविष्कारों द्वारा ही संभव है। अतः किसी भी देश की प्रगति शोध पर निर्भर करती है। इसी कारण प्रत्येक विकसित और विकासशील देश में शोधकार्य की होड़ लगी हुई है। आज प्रत्येक देश अपने आर्थिक स्रोतों का काफी अंश शोध कार्य पर व्यय करता है। यह कहा जा सकता है कि शोध आधुनिक समाज का जीवन प्राण है क्योंकि हमारा आर्थिक जीवन स्तर हमारी संस्कृति और हमारी प्रगति सब शोध पर ही आधारित है। शोध ज्ञान को खोजने विकसित करने और स्थापित करने का सशक्त प्रयास है। यह एक बौद्धिक क्रिया है जो प्रश्न पूछने से आरंम्भ होती है। शोध के द्वारा नवीन ज्ञान की प्राप्ति, बुद्धि विद्यमान ज्ञान का पुनः परीक्षण तथा शुद्धिकरण करके उसे नवीन परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जाता है। अतः पुस्तकालयों के प्रबन्ध में वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग नितांन्त आवश्यक हो गया है।

ई–संसाधन

पिछले कुछ दशकों से कम्प्यूटर द्वारा जानकारी एकत्र की जा रही है। इंटरनेट वेब लगातार संचार के साधनों के विकास को प्रभावित कर रहे हैं। पुनः प्राप्ति ज्ञानवर्द्धन के लिए इंटरनेट का उपयोग किया जा रहा है। विश्वविद्यालयी पुस्तकालयों में शोध कार्य के लिए ये बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस महत्त्व का कारण डिजिटल ई–संसाधनों का कम खर्चीला स्थांनतरित एवं अधिक उपयोगी होना है। सूचना प्रौद्योगिकी ने आज इस स्वरूप को बदल दिया है। आज के आधुनिक पुस्तकालय न केवल महत्त्वपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं बल्कि उनकी सेवाओं और तकनीक में भी बदलाव आ चुका है। पुस्तकालयों का पांरपरिक सेटअप एक विश्व भौतिक स्थान के अन्दर था जिसने एकीकृत डेटा केन्द्रों को रास्ता दे दिया। नेटवर्किंग के जरिए विश्व भर के डेटा स्रोतों को इस्तेमाल करके पुस्तकालय को पूर्ण रूप से उन्नत बनाया जा सकता है। कृष्ण सिंह (2004)[7] प्रौद्योगिकी और पुस्तकालयों की जानकारी को कारगर बनाने के लिए पुस्तकालय आधुनिक होते जा रहे हैं। मिथाओं (2001)[8] 21वीं सदी का उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक क्रांति के साथ नवाचारों को बाहर लाना है। सूचना प्रौद्योगिकी ने आधुनिकीकरण यांत्रीकृत संरक्षक उपहार में दिया है। ऑनलाइन सेवाओं और सूचना प्रणाली की नेटवर्किंग को ध्यान में रखते हुए प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति की कई परतों की जानकारी में वृद्धि हुई है।

ई–संसाधनों की आवश्यकता

वर्तमान युग सूचना युग है। प्रत्येक व्यक्ति विश्वसनीय और सही जानकारी पुस्तकालयों और सूचना केन्द्रों से मिलने की उम्मीद रखता है।

भारत में पुस्तकालय नई जानकारी के लिए इन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए स्वयं को तैयार कर रहें हैं। बहुत से पुस्तकालय डिजिटल और नेटवर्क की जानकारी काफी समय से उपयोग में ला रहे हैं। आज पुस्तकालय परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं चुनौतियों, सिकुड़ते बजट, स्थान की कमी और प्रकाशनों की बढ़ती लागत और दूसरी तरफ सूचना के क्षेत्र में प्रगति से उत्पन्न जानकारियों में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। इस कारण पिछले कुछ दशकों ने पूरे परिपृश्य को बदल दिया है। आज सीडी रोम, मल्टीमीडिया, इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन, ऑनलाइन पत्रिकाएँ अधिक गति से लोकप्रिय हो रहे हैं। नए–नए प्रकाशन उभर कर सामने आ रहे हैं। इस क्रांति को जन्म दिया कम्प्यूटर विज्ञान और प्रकाशीत तंत्र ने जो विश्व के राष्ट्रों को अधिक समीप लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पुस्तकालयों में नेटवर्किंग की जरूरत है क्योंकि एक राष्ट्र की प्रौद्योगिकी मानव और भौतिक संसाधनों पर निर्भर करती हैं। ई–संसाधनों को आसानी से गुगल जैसे खोज इंजन के माध्यम से उपलब्ध कर सकते हैं ई–संसाधन पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के लिए स्वतंत्र हैं। आप इंटरनेट का उपयोग करके किसी भी कम्प्यूटर से उन तक पहुँच सकते हैं। आप को पुस्तकालय के खुलने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

आज एक विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ई–संसाधनों की उपलब्धता बहुत आम हैं अगर पिछले कुछ समय से शिक्षकों और शोधार्थियों के बीच ऑनलाइन संसाधनों की प्राथमिकताओं और विचारों पर प्रकाश डाला जाए तो पिछले कुछ दशकों के दौरान कम्प्यूटर के उपयोग में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। सूचना संसाधन में कम्प्यूटर के आवेदन दृश्य के लिए उत्पाद व सेवाएँ हैं। इंटरनेट और वेब लगातार विद्धानों के संचार एवं नए तरीके के विकास को प्रभावित कर रहे हैं।

भारत की उच्च शिक्षा में ई –संसाधनों की भूमिका

संरक्षण और ज्ञान का संचार भारत में तेजी से हो रहा है। आजादी के समय महाविद्यालयों की संख्या 500 थी जो वर्ष 2012– 2013 में लगभग 35000 के पार पहुँच गई है। सन् 2010 के बाद इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन ने भारतीय शिक्षा का स्वरूप बदल दिया है। ई–संसाधन सभी विश्वविद्यालयी पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं।

शोध के उद्देश्य

- राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय में उपलब्ध शैक्षिक ई–संसाधनों का विद्यार्थियों, द्वारा उपयोग किए जाने की स्थिति का अध्ययन करना।

➢ ई–संसाधनों से सम्बन्धित शोध कार्य

आर., एम, मेनदहैं (2014)[1] ने कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक समुदाय में ई–संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उनका सरलता से उपयोग का अध्ययन किया। निष्कर्ष में यह पाया कि ई–संसाधनों की उपलब्धता कैंपस में सन्तोषजनक है परन्तु भौतिक संसाधनों में कमी है जो कि पाठको की जरूरतों में बाधा उत्पन्न करती है। जी, जैनेटिक एवं टी, सखनन (2013)[2] ने कांचीपूरम जिले के इंजिनियरिंग संस्थाओं में ई–संसाधनों के उपयोग में लैंगिग भिन्नता का अध्ययन किया। निष्कर्ष में यह पाया कि अधिकांश उत्तरदाता ई–संसाधनों के उपयोग और आई सी.टी. संसाधन एवं सेवाएं को आवश्यक मानते हैं तथा उपयोग की एक महत्त्वपूर्ण वस्तु बन गई है। लिंग के आधार पर ई–संसाधनों के उपयोग में कोई अंतर नहीं पाया गया। सी, रंगानाथन (2013)[3] ने तिरूचिरापल्ली के भारतीय दर्शन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के पाठकों द्वारा ई–डेटाबेस के उपयोग का अध्ययन किया । निष्कर्ष में पाया कि ई–संसाधनों की पहुंच से पाठकों की अकादमी उन्नति होती है। अधिकांश पाठक यह मानते हैं कि ई–संसाधनों तक पहुंच सरल है और ये आधुनिक सूचना प्रदान करते हैं। जब कि परम्परागत साधनों से पाठकों को सूचना प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पुस्तकालय के प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए जिस के माध्यम से पाठक अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। जे, राज वकाई (2012)[4] ने अन्नामलाई विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग का अध्ययन किया। निष्कर्ष में यह पाया कि अन्नामलाई विश्वविद्यालय में अधिकांश पुरूष पाठक पुस्कालय प्रतिदिन आते हैं इनमें से अधिकांश 67 प्रतिशत पुरूष ऑनलाईन सूचनाएं प्राप्त करते हैं। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ई–संसाधनों की उपलब्धता शोधार्थियों की दृष्टि में संतोषजनक है। दिलीप, स्वेन (2009)[5] ने भारतीय राज्य के व्यवसायिक विद्यालयों के पुस्तकालयों में ई–संसाधनों के उपयोग के प्रति पुस्तकालयाध्यक्षों की राय का अध्ययन किया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि इंटरनेट पर आधारित संसाधनों का सी, डी, रोम डेटाबेस की अपेक्षा अधिक उपयोग किया जा रहा है।

➢ शोध विधि

- शोधार्थी अनुसंधान कार्य के लिए जिस विधि का उपयोग करता है वह समस्या की प्रकृति पर निर्भर करती है। शोधकर्ता विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर व अध्ययन से संबंधित साहित्य का अवलोकन करके परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोध विधि का चयन करता है। शोधार्थी ने सर्वेक्षण वर्णाननात्मक विधि का उपयोग किया है। ताकि सही परिणाम प्राप्त हो सके।

न्यादर्श

प्रयुक्त शोध में शोधार्थी द्वारा स्तरिकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है। इस विधि के अन्तर्गत शोधार्थी कुल जनसंख्या को किसी विशेष गुण के आधार पर समूहों में बांट देता है।

शोध कार्य के लिए राजस्थान राज्य के 5 संभागों में से केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय तथा निजी विश्वविद्यालय में से 10 विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय का चयन लॉटरी के आधार पर किया गया है। यह जनसंख्या का 33 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है।

विभिन्न विश्वविद्यालयों चयनित उपयोगकर्त्ता

विश्वविद्यालय का नाम	विद्यार्थी
केन्द्रीय विश्वविद्यालय अजमेर	39
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर	42
कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर	43
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर	42
नेशनल विधि विश्वविद्यालय जोधपुर	41
आयुर्वेदिक चिकित्सक विश्वविद्यालय जोधपुर	37
तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा	47
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा	15
जयपुर नेशनल विश्वविद्यालय जयपुर	36
एमिटि विश्वविद्यालय जयपुर	39
कुल	381

कुल योग – 381

शोध के उपकरण

प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीनदत्त संकलित करने हेतु कतिपय यंत्रों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यन्त्रों को ही

उपकरण कहते हैं। शैक्षिक अनुसंधान की सफलता के लिए विश्वसनीय एवं वैद्य उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।
जिस प्रकार बढ़ई की औजार पेटी में प्रत्येक औजार का भिन्न उपयोग होता है। उसी प्रकार प्रत्येक अनुसंधान में उपकरण का किसी विशेष परिस्थितियों में निश्चित प्रयोग होता है। जॉन डब्ल्यू वेस्ट13

शोध उपकरण के प्रकार :–
शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने निम्न उपकरणों का निर्माण किया।

- **प्रश्नावली**
- **साक्षात्कार अनुसूची**

गुणात्मक विश्लेषणः– प्रस्तुत शोध कार्य में गुणात्मक विश्लेषण किया है। जिसमें तथ्यों या आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए शोधार्थी ने प्रतिशत का उपयोग किया है।

पुस्तकालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति की आवृत्ति

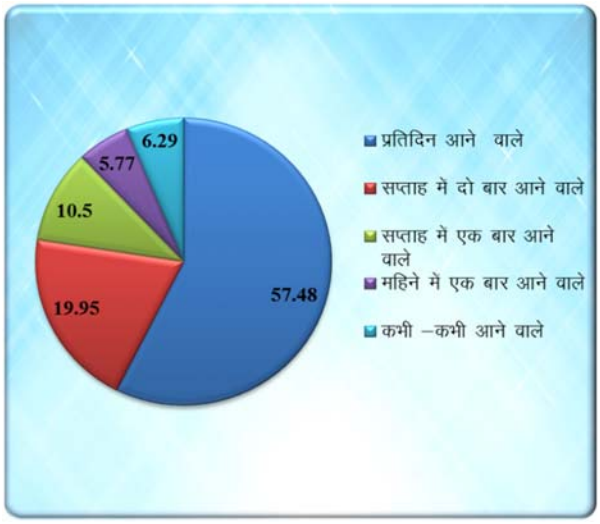

सप्ताह में प्रतिदिन आने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 381 में से 57.48 प्रतिशत है। इन 10 विश्वविद्यालयों में से सबसे अधिक राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के 88.10 प्रतिशत विद्यार्थी प्रतिदिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।
सप्ताह में दो बार आने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 381 में से 19.95 प्रतिशत है। इन 10 विश्वविद्यालयों में से आयुर्वेदिक चिकित्सा विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सबसे अधिक 43.24 प्रतिशत विद्यार्थी सप्ताह में दो बार पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।
सप्ताह में एक बार आने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 381 में से 10.50 प्रतिशत है। इन 10 विश्वविद्यालयों में से जयपुर नेशनल विश्वविद्यालय के सबसे अधिक 22.22 प्रतिशत विद्यार्थी सप्ताह में एक बार पुस्तकालय का उपयोग करते है।
पुस्तकालय में महीने में एक बार आने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 381 में से 5.77 प्रतिशत हैं। इन 10 विश्वविद्यालयों में से वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के सबसे अधिक 53.33 प्रतिशत विद्यार्थी महीने में एक बार पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।
पुस्तकालय में कभी–कभी आने वाले 381 विद्यार्थियों में से 6.30 प्रतिशत विद्यार्थी कभी–कभी पुस्तकालयों का उपयोग करते हैं। इन 10 विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय में कभी–कभी आने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 381 में से 6.30 प्रतिशत है। इन 10 विश्वविद्यालयों में से वर्धमान खुला महावीर विश्वविद्यालय के सबसे अधिक 26.67 प्रतिशत विद्यार्थी कभी–कभी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।
पुस्तकालय जाने की बारम्बारता जानने पर यह ज्ञात हुआ की प्रतिदिन 57.48 प्रतिशत विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय की वेबसाइट होने की जानकारी विद्यार्थी सबसे अधिक रखते हैं। वे पुस्तकालय में बैठकर सबसे अधिक ई–संसाधनों का उपयोग करते हैं इनका उपयोग वे पुस्तकालय कर्मचारियों एवं मित्रों के कहने पर करते हैं। ई–संसाधनों में वे सबसे अधिक ई–पुस्तकों का उपयोग करते हैं। वे ई–संसाधनों को बेहतर समझते हैं तथा उन्होंने ई–पुस्तकों को प्रथम वरीयता प्रदान की है। वे पुस्तकालय में ई–संसाधनों की वृद्धि के पक्ष में है वे व्यक्तिगत रूप से इनकी वृद्धि चाहते हैं। वे मुद्रित–संसाधनों की तुलना में ई–संसाधनों को बेहतर समझते हैं। ई–संसाधनों में उन्होंने सबसे अधिक सुधार की आवश्यकता बताई।

संदर्भ सूची

1. नितरंजन, एम. (2004). इलेक्ट्रॉनिक्स बुक मैनेजमेंट एण्ड यूज. लुधियाना : के.सी. पब्लिकेशन।
2. डारेक्टरऐट ऑफ लिटरेसी एण्ड कोन्टीनयूंग एजूकेशन. गार्वमेन्ट ऑफ राजस्थानः राजलेटरेसी ओ.आर.जी. आरचिजड, फोरमैड ऑरिजनल ऑन 23 मार्च 2012।
3. टौनोपर, कारौल एवं राजा, डोनाल्ड (2000). फारवर्ड इलेक्ट्रॉनिक्स जर्नल स्पेशल लाइब्रेरी एसोसियशन आर.एस. बी.एन. 0–87111–507–2 ।
4. राय, पारसनाथ. (2008) .अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।
5. शर्मा, आर.ए. (2005) . शिक्षा अनुसंधान. मेरठः सूर्या पब्लिकेशन
6. मेलबिन, एल. आर. (1956). द चांस टू रिड पब्लिक लाइब्रेरीस ऑफ द वल्ड।
7. सिंह, शंकर (2003). सूचना प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय . नई दिल्लीः एस.एस. प्रकाशन ।
8. सिंहए शंकर. (2006). इंटरनेट और आधुनिक पुस्तकालय . नई दिल्लीः पूर्वाचंल प्रकाशन ।
9. खन्ना, जे.के. (2008). मैनेजिंग टैक्नीकल सर्विसेज इन लाइब्रेरीस. नई दिल्लीः संजय पब्लिकेशन ।
10. एनी, ओकन, ई, टूवार्डस इफेक्टीव डेवलपमेन्ट ऑफ इलैक्ट्रोनिक इनफॉर्मेशन रिसोसिस इन यूनिवसिर्टी लाइब्रेरीस वॉल्यूम 20 (6–7) ।
11. केबेडे जी, (2002). द चेन्जींग इनफोर्मेशन नीड ऑफ आनसर्स इन इलेक्ट्रॉनिक्स इनवायरमेन्ट, द इलेक्ट्रॉनिक लाईब्रेरी वॉल्यूम 20 (1) ।
12. क्लाइन, एल .(2000). शैक्षणिक पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक बाजार का विकास पुस्तकालीय के संग्रह अधिग्रहण और तकनीकी सेवा वॉल्यूम 24(2)
13. काओ, जेड, ली, एस (2006). अमेरिका प्रिट अखबारों के संचलन पर इंटरनेट समाचार पत्रों में बढ़ने के प्रभाव एक मुख्य धारा अध्ययन न्यू जर्सी लारेः एसोसिएट्स
14. युंग, डी, एस .(2008). इंटरनेट सुविधाओं, पैटर्न की पहचान और पाठकों के उपयोग का अनुमान लगाया संगगणन द्वारा संचार के जर्नल वॉल्यूम (3)
15. गरिंजन, एस .(2005). एक डिजिटल क्रांति डिजिटल युग में मीडिया और सांस्कृतिक उत्पादन के पुनमूल्यारंकन की राजनीति और सामाजिक विज्ञान अमेरिका अकादमी का इतिहास 597 (13)